स्कूल आपदा प्रबंधन योजना

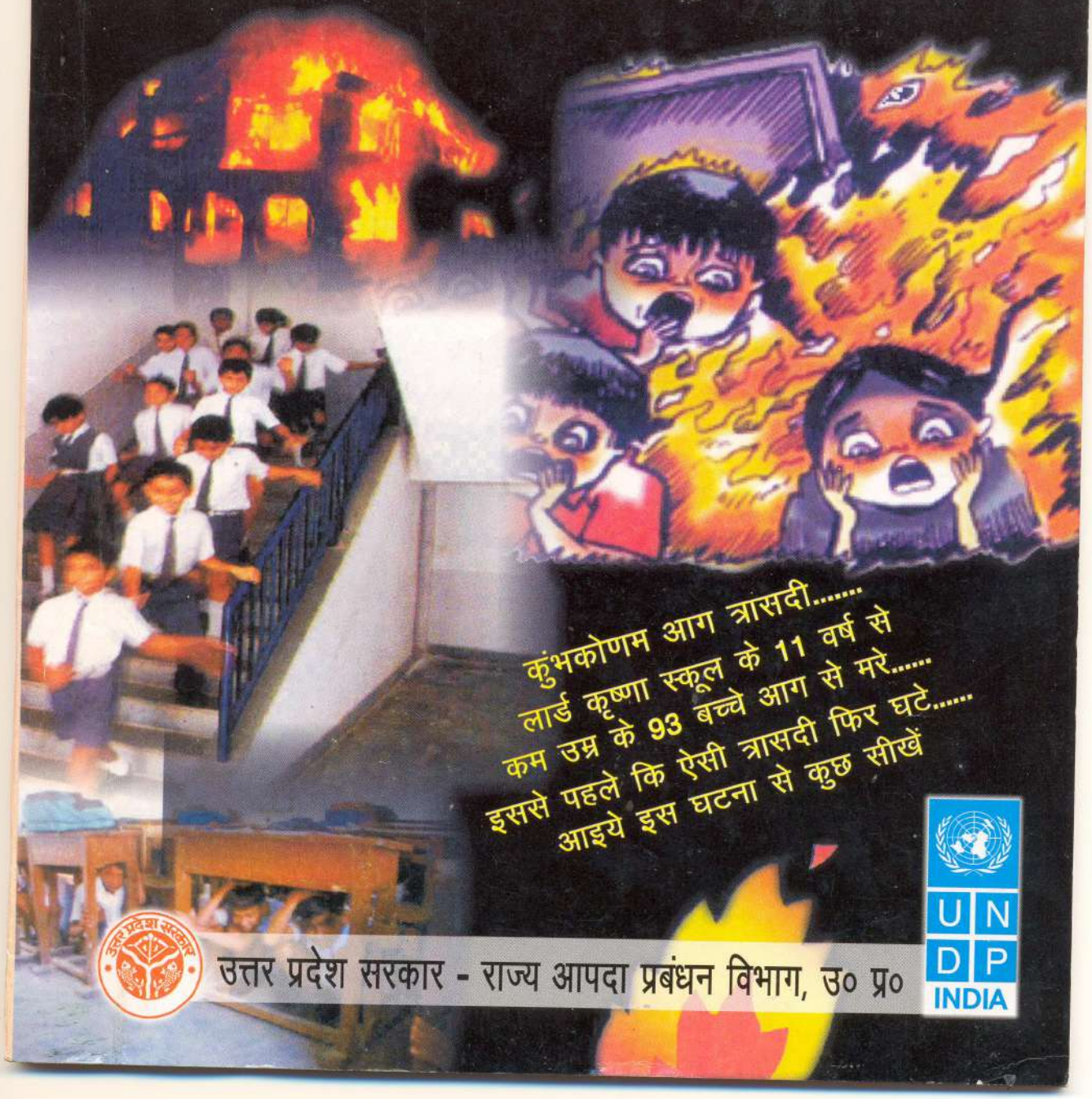

23 दिसम्बर, 1995
........हरियाणा........
........425 लोग..........
ज्यादातर स्कूल के बच्चे.....
एक पुरस्कार वितरण समारोह में
आग में फँसे

कुंभकोणम आग त्रासदी........
लार्ड कृष्णा स्कूल के 11 वर्ष से
कम उम्र के 93 बच्चे आग से मरे......
इससे पहले कि ऐसी त्रासदी फिर घटे......
आइये इस घटना से कुछ सीखें

उत्तर प्रदेश सरकार - राज्य आपदा प्रबंधन विभाग, उ० प्र०

UNDP INDIA

योजना की आवश्यकता

विद्यालय में आबादी सघन होती है जहाँ समाज के सर्वाधिक सुकुमार वर्ग आते हैं। उनकी सुरक्षा के लिए यह अति महत्वपूर्ण है कि विद्यालय आपदा प्रबंधन योजना बनाई जाए। इसके अतिरिक्त विद्यालय में अनेक संसाधन एवं सार्वजनिक सम्पत्ति होती है, जिनको आपदा से सुरक्षित रखना भी विद्यालय का कर्तव्य है। इसके अतिरिक्त विद्यालय का यह उत्तरदायित्व भी है कि वह अपनी सुरक्षा के साथ-साथ पड़ोसी समाज की सुरक्षा का भी ध्यान रखे जिससे वह जुड़ा हुआ है।

योजना के चरण

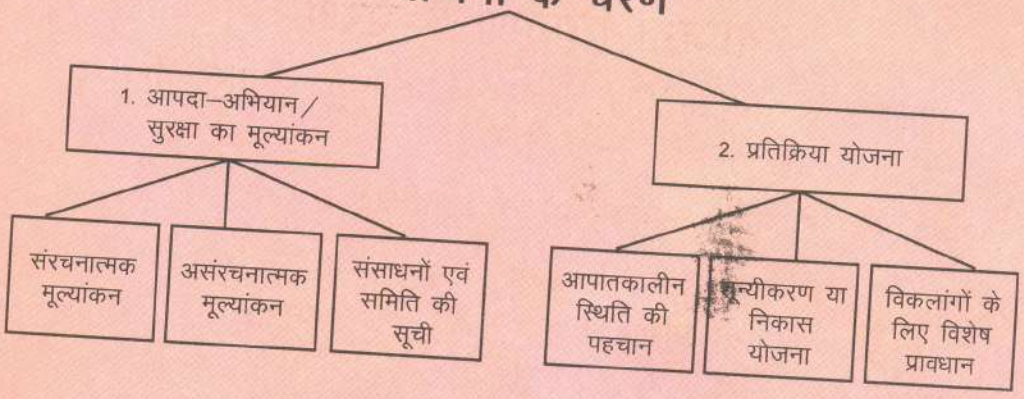

योजना का निर्माण करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आपदाकालीन स्थिति का सामना करने के लिए प्रस्ताव तैयार करना चाहिए। विद्यालय एवं इसके आसपास के क्षेत्रों का लिखित विवरण तैयार करना चाहिए ताकि आपदाकालीन स्थिति की पहचान करने के लिए आधारभूत ढांचा तैयार हो सके। इससे यह अनुमान सरलतापूर्वक लगाया जा सकता है कि भविष्य में विद्यालय को किन आपातकालीन स्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यदि एक बार आपदाओं का अभिज्ञान हो जाये तो उनसे निपटने के लिए प्रबंधन योजना का निर्माण करना, सुरक्षात्मक योजना बनाना एवं क्रियान्वयन कार्यक्रम का निर्माण करना सुगम हो जाता है। इससे उनके प्रभावों को न्यूनतम किया जा सकता है तथा उनको आसानी से नियंत्रित

किया जा सकता है। यहाँ तक कि उनको टाला भी जा सकता है। परन्तु सभी आपातकालीन स्थितियों को टाला नहीं जा सकता इसलिए प्रबंधन योजना का विस्तारपूर्वक वर्णन करना आवश्यक है। इसमें आपातकाल के समय सहयोग, नियंत्रण, समन्वय, संप्रेषण करने वाली सभी मुख्य एजेंसियों एवं इकाइयों की भूमिकाओं एवं उत्तरदायित्वों का विवेचन होना चाहिए।

एक शिक्षक एवं छात्र होने के नाते विद्यालयी आपदाओं को कम करने में आप भी स्वयं अपनी एवं समुदाय की सुरक्षा हेतु महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

योजना निर्माण के चरण

विद्यालय प्रबंधन समिति/शिक्षकों की संवेदना जागृति गोष्ठी

↓

विद्यालय आपदा प्रबंधन समिति का निर्माण

↓

आपदा-अभिज्ञान एवं सुरक्षा का मूल्यांकन

↓

विद्यालय आपदा प्रबंधन योजना का प्रारूप तैयार करना

↓

विद्यालय आपदा प्रबंधन टीमों का निर्माण एवं प्रशिक्षण

↓

जागरूकता अभियान एवं विद्यालय में योजना का प्रचार-प्रसार

↓

नियमित रूप से मॉक ड्रिल कराना एवं एस0डी0एम0पी0 को रिपोर्ट देना

↓

योजना को बेहतर एवं प्रभावशाली बनाने के लिए उसका मूल्यांकन

प्रथम चरण

जागरूकता पैदा करने के लिए विद्यालय प्रबंधन समिति एवं शिक्षकों की भावनात्मक गोष्ठी एस0डी0एम0पी0 को बनाते समय इसकी योजना की तैयारी करने हेतु एवं शिक्षकों को प्रशिक्षण देने हेतु प्रशिक्षक को सर्वप्रथम एक सभा का आयोजन करना चाहिए जिसमें विद्यालय की ओर से निम्नलिखित की उपस्थिति वांछनीय है :-

- प्रधानाचार्य
- प्रशासनिक स्टाफ
- सभी शिक्षकगण
- प्रधान छात्रा एवं प्रधान छात्र
- विभिन्न क्लबों के सभी विद्यार्थी नेता, प्रशासक एवं सभी सदनों के कैप्टन इत्यादि

इन सबकी उपस्थिति में सभा में निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा की जा सकती है :-

- संभावित आपदाओं का प्रस्तुतीकरण
- आपदाओं के प्रबंधन के लिए विद्यालय को क्या तैयारी करनी चाहिए ?
- विद्यालयों को ये तैयारी क्यों करनी चाहिए ?
- और तैयारी कैसी करनी चाहिए ?

द्वितीय चरण

विद्यालय आपदाकालीन प्रबंधन समितियों एवं समूहों का निर्माण :-

इसके लिए तीन समूहों का गठन किया जाना चाहिए-

- समन्वय समूह
- आपदाकालीन सजग-चेतना समूह
- आपदाकालीन प्रतिक्रिया समूह

इसके लिए साथ-साथ इन तीनों समूहों की भूमिकाएँ एवं उत्तरदायित्व भी योजना में वर्णित किए जाने चाहिए। यहाँ सर्वप्रथम हम समन्वय समूह, विद्यालय आपदाकालीन प्रबंधन समिति की चर्चा करेंगे।

विद्यालय आपदाकालीन प्रबंधन समिति (एस0डी0एम0पी0 / समन्वय समूह)

कार्यकारी सदस्य

- सभापति - प्रधानाचार्य
- उप प्रधानाचार्य प्राथमिक एवं माध्यमिक विभाग के प्रधान
- जिला अधिकारी / मंडलीय उपशिक्षा अधिकारी
- अभिभावक शिक्षक संघ का अध्यक्ष
- एक या दो अभिभावक (कम से कम एक महिला अवश्य होनी चाहिए)
- चार विद्यार्थी (आपदाकालीन जागरूक समूह का छात्र नेता, प्रतिक्रिया समूह का छात्र नेता, छात्र प्रधान एवं छात्रा प्रधान)
- आपातकालीन राहत विभाग, राजस्व विभाग, आपदा प्रबंधन विभाग, मंडलीय प्रशासन, नगर निगम आदि विभागों के प्रतिनिधि।
- अग्निशमन विभाग का प्रतिनिधि नजदीकी पुलिस स्टेशन से।
- स्वास्थ्य विभाग का प्रतिनिधि
- रेड क्रास के प्रतिनिधि / सेंट जॉन ब्रिगेड
- प्रशासनिक / ककलाजिस्टिक अधिकारी / विद्यालय कार्यालय से सम्पत्ति प्रबंधक
- स्थानीय समुदाय से आवास कल्याण संघ के प्रतिनिधि
- स्थानीय कार्यरत एन0जी0ओ0 प्रतिनिधि
- बाजार व्यापारिक संघ के प्रतिनिधि (स्थानीय समुदाय से)
- स्थानीय चिकित्सक
- अन्य (एन0सी0सी0, एन0एस0एस0, स्काउट एवं गाइड, नेहरू युवक केन्द्र संगठन इत्यादि)

एस0डी0एम0पी0 की भूमिका और दायित्व :-

- विद्यालय आपदा प्रबन्धन योजना का मूल्यांकन
- वर्ष में दो बार मॉक ड्रिल कराना
- योजना की कार्यशीलता की विश्वसनीयता के लिए योजना का नियमित अंतरालों पर आधुनिकीकरण
- विभिन्न आपदाओं (भूकंप, आग, बाढ़, तूफान आदि) के लिए विद्यालय की संरचनात्मक सुरक्षा आवश्यकताओं को देखना, पहचान किए गए खतरों हेतु विद्यालय की इमारत का मूल्यांकन और आवश्यक उपचारात्मक कार्य
- आपदा के दौरान एस0डी0एम0पी0 दलों और टीमों का संयोजन करेगा।
- एस0डी0एम0पी0 द्वारा मीडिया प्रबन्ध किया जाएगा।
- विद्यालय में शरण लेने वालों (बच्चे और बाहरी व्यक्ति) को आवश्यकता के समय राहत और बाह्य सहायता का वितरण
- आवश्यक मामलों में विद्यालय के बच्चों तथा बाहरी व्यक्तियों के लिए विद्यालय से पृथक शरण स्थलों की पहचान

चरण - 3

संकट की पहचान और सुरक्षा का मूल्यांकन

(क) क्षेत्र में उपस्थित संरचनात्मक खतरों की पहचान करना :- विद्यालय की संरचनात्मक सुरक्षा का भूकंप, तूफान, बाढ़ और आग जैसे खतरों के संदर्भ में मूल्यांकन आवश्यक होता है। इसके लिए विद्यालय के अधिकारियों का उसके आर्किटेक्ट अथवा समीपस्थ स्थानीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण/जिला प्रशासन से सम्पर्क जरूरी है जो कि विद्यालय के मूल्यांकन में उनका मार्गदर्शन कर सकते हैं। क्या आपके विद्यालय की इमारत काफी पुरानी है.....यदि हाँ, तो इस बात की उच्च संभावनाएं हैं कि विद्यालय के निर्माण के समय भवन संहिता का आधुनिकीकरण किया गया होगा और जो अब सुरक्षित नहीं है।

क्या आपका विद्यालय सुरक्षित और मजबूत नजर आता है.....यदि हाँ, तो इसकी निश्चितता के लिए इसका मूल्यांकन एक योग्य/प्रशिक्षित स्ट्रक्चरल इंजीनियर से कराया जाना चाहिए जिसे भूकंप इंजीनियरिंग का भी ज्ञान हो।

(ख) क्षेत्र में उपस्थित गैर-संरचनात्मक खतरे की पहचान :- योजना द्वारा क्षेत्र में उपस्थित उन खतरों की पहचान की जानी चाहिए जो बार-बार घटित होते हैं। उपस्थित खतरों की पहचान हमारे लिए इसलिए आवश्यक है कि इनमें किसको स्कूल उद्घाटित कर सकता है। इस संकट मूल्यांकन के लिए क्षेत्र में पिछले 20-25 वर्षों में घटित आपदाओं के इतिहास को ध्यान में रखना होगा। इस संकट मूल्यांकन के आधार पर एस0डी0एम0पी0 के सदस्य विद्यालय आपदा प्रबन्धन योजना बनाएंगे। इस विवरण का विस्तार विद्यालय से बाहर होगा और इसमें एक विवरण उस आसपास के क्षेत्र का भी होगा जिसमें विद्यालय अवस्थित है। इसमें यह भी शामिल होगा कि क्या विद्यालय शहरी क्षेत्र में स्थित है या रिहायशी दूरवर्ती क्षेत्र में।

एक संकट मूल्यांकन बच्चों के द्वारा अपने अध्यापकों के मार्गदर्शन में विद्यालय प्रांगण में और घूम-फिर कर आसपास के क्षेत्रों का भी बनाया जा सकता है। कक्षा निर्धारित मार्गों से होती हुई निर्दिष्ट बाहरी स्थलों पर पहुँचे। छात्रों को मार्ग में आने वाली उन वस्तुओं के दिमाग में ही नोट्स बनाने को कहें जो कि भूकम्प के दौरान खतरा बन सकती हैं अथवा जिन पर उन्होंने विचार किया है। ऐसे खतरों की एक सूची निम्न प्रकार है :-

- बिजली गुल होना (क्या आपातकालीन प्रकाश व्यवस्था है)
- बड़े कमरे अथवा सीढ़ियों, छतों के टाइल्स अथवा दीवारों के प्लास्टर के कचरे से अस्त-व्यस्त हों।

- बाहर निकलने के दरवाजे और खिड़कियाँ जो कि जाम हैं और नहीं खुलते।
- ईंट, शीशा और कबाड़ का ढेर, जमीन पर बाहर निकली पड़ी बिजली की तारें।
- लटकती छत।
- झूलते हुए विद्युत उपस्कर।
- बड़ी बुककेस अथवा संदूक जो कि पेंच न लगाने के कारण लरजने की अवस्था में हो।
- कक्षा के उपकरण जैसे- टी0वी0, वी0सी0आर0, स्टीरियो और स्लाइड प्रोजेक्टर।
- क्षेत्र जहाँ ज्वलनशील द्रव्य संचित किए गए हैं।
- रसायन शास्त्र प्रयोगशाला जहाँ रसायन रखने की बोतलों को बिखरने से बचाकर नहीं रखा गया है।
- विद्यालय के बाहर उपस्थित खतरे।
- उच्च विद्युत तारें।
- वृक्ष।
- भवन के पास के क्षेत्र जहाँ मुंडेर, छत की टाइल्स, चिमनियां, शीशे आदि का कबाड़ पड़ा हो।
- पेड़ों के तने, सीमेंट के खण्ड।
- ढँके हुए रास्ते।
- स्थान जिनके नीचे उखड़े गैस पाइप हैं।
- चेन से जुड़ी हुई चहारदीवारी (जीवित बिजली के तारों के स्पर्श से जो कि बिजली के झटके का खतरा हो सकती हैं)

विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों को सूचीबद्ध करना :-

विद्यालय में उपलब्ध सभी संसाधनों को इस प्रकार सूचीबद्ध किया जा सकता है:-

- प्रशिक्षित मानवीय संसाधनों की सूची (इस समूह में वे शिक्षक एवं विद्यार्थी आयेंगे जिनको प्राथमिक चिकित्सा एवं बचाव, रिक्तिकरण आदि कार्यों का ज्ञान है।)
- विद्यालय में उपलब्ध विभिन्न साधनों की सूची जैसे :-स्ट्रेचर, अग्निशामक यंत्र, सीढ़ियाँ, रस्सियाँ, टार्च, सम्प्रेषण व्यवस्था, प्राथमिक चिकित्सा, विद्यालय परिसर में खुला स्थान इत्यादि।
- नजदीकी उपलब्ध संकटमय संसाधनों की सूची।
- विद्यालय के आस-पास स्थित विभिन्न स्थलों एवं संसाधनों का विस्तृत विवरण जिसमें उनके नाम, पता, दूरभाष संख्या इत्यादि भी समाविष्ट होने चाहिए। जैसे- यदि विद्यालय के पास कोई अस्पताल है तो अस्पताल में उपलब्ध बिस्तरों की संख्या, डाक्टरों की संख्या आदि की जानकारी का भी रिकार्ड होना चाहिए।

निम्नलिखित साधनों की भी एक सूची बनायें :-

- विद्यालयों में कमरों की संख्या
- रिक्तीकरण के लिये संभावित खुले क्षेत्र
- सीढ़ियाँ एवं लिफ्ट - उनकी स्थिति एवं प्रयोग
- खुले बरामदे एवं छत

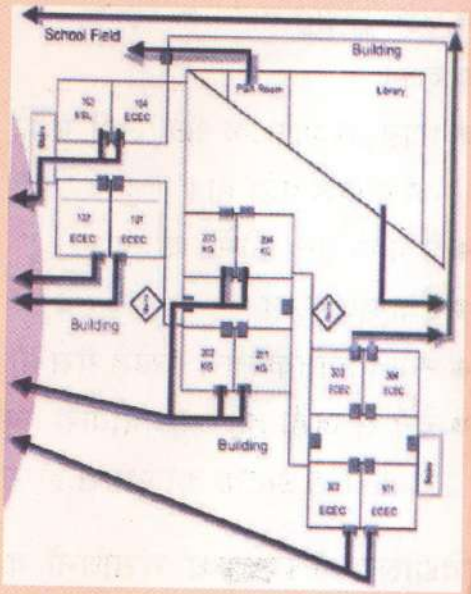

चरण :- 4

विद्यालय आपदा प्रबंधन योजना के दस्तावेज तैयार करना :-

1. विद्यालय की भौगोलिक स्थिति के विश्लेषण के लिये एक मानचित्र का बनाना आवश्यक है। यह मानचित्र शिक्षकों एवं छात्रों की सहायता से बनाया जा सकता है। इस मानचित्र में

निम्नलिखित वस्तुओं का संकेत किया जाना चाहिये :-

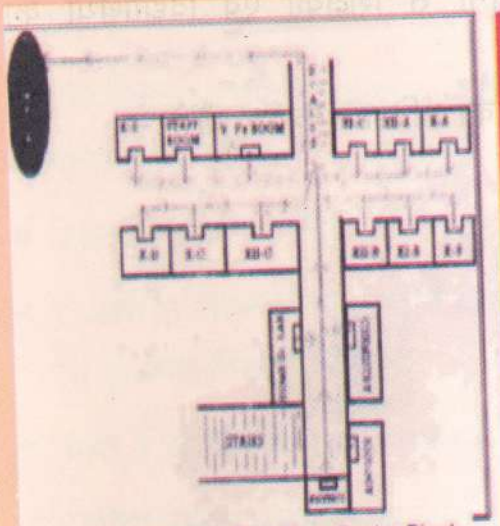

vacuation Route – First Floor Senior Block

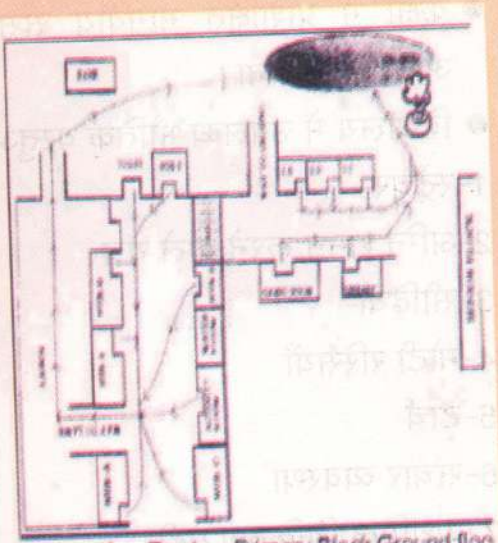

Evacuation Route – Primary Block Ground floo

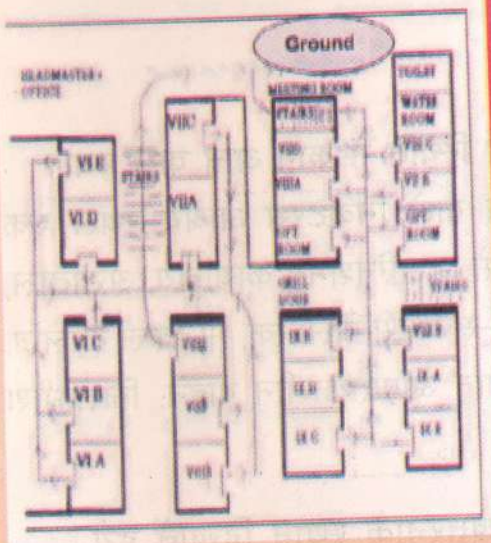

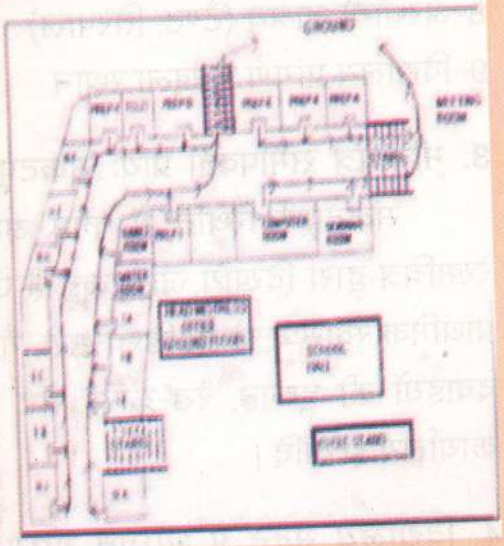

- विद्यालयों में कक्षा-कक्षों की संख्या (पक्के, आर0सी0सी0, टायल्ड)
- विद्यालय का स्टाफ-कक्ष
- विद्यालय की विभिन्न प्रयोगशालाएँ (भौतिकी, रसायन, जीव विज्ञान, गृह विज्ञान इत्यादि)
- विद्यालय परिसर में स्थित खेल का मैदान अथवा खुला स्थल।

2. विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों को दर्शाने वाला मानचित्र

- कक्षा में प्रशिक्षित मानवीय संसाधनों से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का अभिज्ञान कराना।
- विद्यालय में उपलब्ध भौतिक वस्तुओं का अभिज्ञान कराना जैसे :-

1-स्ट्रेचर

2-अग्नि शमन करने वाले यंत्र

3-सीढ़ियाँ

4-मोटी रस्सियाँ

5-टार्च

6-संचार व्यवस्था

7-प्राथमिक चिकित्सा पेटी

8-अस्थायी आश्रय (टैण्ट, तिरपाल)

9-विद्यालय प्रांगण में खुला स्थान

3. मानचित्र समीपवर्ती प्रायः संकटपूर्ण स्थिति में काम आने वाले स्थल

संकटपूर्ण स्थिति में काम आने वाले निकटस्थ आश्रय स्थल एक रेखाचित्र द्वारा दिखाये जा सकते हैं जैसे :- अग्निशमन कार्यालय, अस्पताल, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, डिस्पेन्सरी, गैर-सरकारी क्लिनिक, मेडिकल कालेज, दवाइयों की दुकान, रैड-क्रास, सैंट जान आपातकालीन वाहन, जिलाधीश कार्यालय इत्यादि।

4. विद्यालय भवन में आघात योग्य खतरनाक स्थान दिखाते हुये मानचित्र एवं उससे निपटने के उपाय

- प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या (लड़के, लड़कियाँ, विकलांग, बीमार और रोगी) प्रत्येक कक्षा के मानचित्र में रेखांकित किये जायें।
- विद्यालय में आघात-योग्य कक्षाएँ।
- नल (पीने योग्य पानी) विद्यालय के आघात-योग्य क्षेत्र में स्थित।

- प्रमुख स्विच-बोर्ड एवं बिजली की तारें जिनसे आघात (चोट) लग सकता है।
- यदि विद्यालय पर्वतीय ढलान पर है तो भूमि की मिट्टी की अवस्था आघात योग्य है या नहीं।
- विद्यालय प्रांगण में नीची जमीन के टुकड़ों की पहचान।
- बाधाओं से लड़ने के उपाय एवं लिखित सुझाव, विद्यालय के सुरक्षित स्थान एवं सुरक्षित निकास मार्ग।
- नक्शे में सुरक्षित स्थानों की पहचान।
- सुरक्षित स्थान जहाँ पर छात्र व स्टाफ कर्मचारी सदस्य सुरक्षा प्राप्त कर सकते हैं (उस स्थान पर कितने छात्र सुरक्षित रह सकते हैं, संख्या का अंकन भी होना चाहिए)।

निकास-मार्ग :- विद्यालय का विस्तृत मानचित्र (नक्शा) जिसमें सभी सीढ़ियाँ, दरवाजे और खिड़कियां दिखाए गए हों।

- आग लगने/भूकम्प की स्थिति में निकास मार्ग नक्शे में स्पष्टतया रेखांकित किया गया हो।
- नक्शे में विभिन्न निकास-मार्गों को तीरों से चिन्हित किया गया हो।
- विद्यालय के नक्शे में विभिन्न स्थानों की स्थिति दिखाई जाये "आप यहाँ हैं" बड़े लाल अक्षरों में लिखा गया हो। इससे प्रत्येक व्यक्ति को नक्शा देखते समय निकटवर्ती निकास स्थान व निकास मार्ग की उचित जानकारी में सहायता मिल सकेगी।
- वैकल्पिक निकास मार्गों की व्यवस्था, यदि मुख्य निकास-मार्ग नष्ट हो गया है या पहुँच के बाहर हो।

चरण - 5

आपदा प्रबंधन टोली का गठन एवं प्रशिक्षण

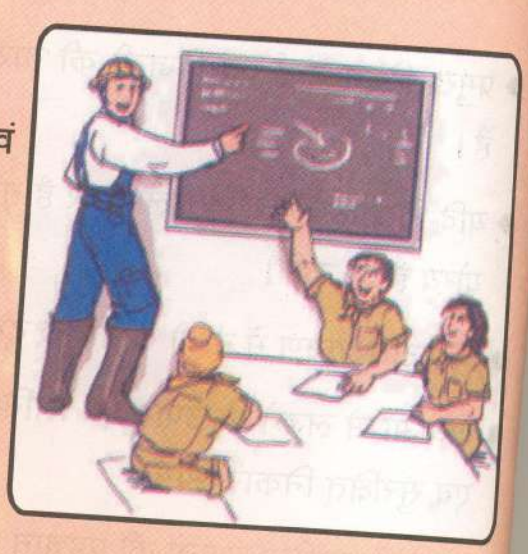

1- आपदा जागरूक समूह

जागरूकता पैदा करने वाली टोली

सदस्य

- अध्यापक कला
- हस्तकला अध्यापक
- नाटक अध्यापक
- संगीत अध्यापक
- 1-2 अभिभावक (विशेषतः जो मुद्रण / संचार माध्यम में काम करते हों)
- एन0जी0ओ0 / प्रसिद्ध व्यक्ति
- हस्तकला निपुण एवं वाकपटु विद्यार्थी

कर्तव्य और उत्तरदायित्व

आपदा से पूर्व

- जानकारी, शिक्षा एवं संप्रेक्षण से संबंधित जैसे इश्तहार, प्रचार-पट्ट, साधारण टिप्स, क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए एवं आपदा प्रबन्धन हेतु नुक्कड़ नाटक।
- सम्पूर्ण विद्यालय की सभी कक्षाओं, कर्मचारियों और अध्यापकों को क्रमबद्ध तरीके से आपदा प्रबन्धन जागरूकता संबंधी गतिविधियों को विकसित करने की जानकारी प्रदान करना।
- समीपवर्ती क्षेत्र में स्थानीय निवास कल्याण समिति के प्रतिनिधियों, स्थानीय पुलिस स्टेशन, स्थानीय गैर सरकारी संगठनों के साथ आपदा प्रबन्धन संबंधी जागरूकता विषय गतिविधियों को विकसित करना।
- छात्रों तथा अध्यापकों में आपदा प्रबन्धन सम्बंधी नई गतिविधियों और अभ्यास को संगठित करना ताकि सामान्य अवस्था में भी उनकी रूचि

लगातार इस विषय में बनी रहे। विद्यालय निम्नलिखित कार्यों की व्यवस्था एवं अभ्यास कर सकता है जैसे :-

- कला संबंधी कार्य : पोस्टर, बुलेटिन, बोर्ड, प्रदर्शनी, वॉल पेपर, पत्रिका, कार्ड, इत्यादि।
- कलात्मक प्रतियोगिताएँ : निबन्ध, कविता और आदर्श वाक्य / सूत्र वाक्य लेखन।
- नाटक, एकांकी, नुक्कड़ नाटक, विषय संबंधी अभिनय।
- गीत-लेखन।
- वाद-विवाद।

- सुरक्षा उपायों का प्रदर्शन जैसे अग्नि शमन, प्राथमिक-चिकित्सा से संबंधित एजेंसियों के साथ बचाव कार्य प्रदर्शन।
- विभिन्न बाधाओं के लिए रिक्तीकरण का अभ्यास।
- आपदा संबंधी चेतावनी व सूचना प्रचार के लिए छात्रों, अध्यापकों एवं कर्मचारियों को जागरूक किया जाये ताकि विभिन्न चेतावनी स्तरों, रंगों और झण्डों के क्षेत्रों / चिन्हों को पहचान सकें।

आपदा के समय

- भूकम्प के पहले झटके के साथ अपने सिर या शरीर को बचाव के लिये झुकाएं।
- लकड़ी के फर्नीचर के नीचे बचाव के लिये छिपने का प्रयास करें। यदि घर के बाहर हैं तो भवनों से दूर रहें।
- विद्यालय को खाली करवाने में रिक्तीकरण करवाने वाली टीम की अन्य बाधाओं में सहायता करें।
- यदि कोई रासायनिक बाधा हो तो चेतावनी दल को सहयोग दें ताकि पूरे विद्यालय में सुरक्षा के उपायों की सूचना का प्रचार हो सके।

आपदा के पश्चात्

क्या करें और क्या न करें, सूचना का प्रचार करें ताकि स्थिति और न बिगड़े। चेतावनी और प्रचार दल को इस कार्य में पूर्ण सहयोग दें।

2. चेतावनी और सूचना प्रचार दल सदस्य

- कम्प्यूटर अध्यापक (अन्य कोई भी अध्यापक जिसे कम्प्यूटर और नेटवर्क कार्य की जानकारी हो)
- बिजली का कार्य जानने वाले अध्यापक
- भूगोल अध्यापक
- हैम-क्लब अध्यक्ष
- एक-दो अभिभावक (जो भारतीय मौसम विभाग, केन्द्रीय जल आयोग, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के कार्यालय या पुलिस में काम करते हों)
- 4-5 छात्र (जो वी0एच0एफ0 सैट चलाना जानते हों)
- हैम-क्लब के सदस्य

इस दल में आठवीं से बारहवीं कक्षा के विद्यार्थी होने चाहिए। छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों को इनकी सहायता के लिए लिया जा सकता है। वी0एच0एफ0 सैट चलाना जानने वाले छात्र और हैम-क्लब के सदस्य भी इसी दल में रहेंगे।

कार्य और उत्तरदायित्व

आपदा से पूर्व

टी0वी0/रेडियो/इंटरनेट से उन संभावित खतरों की ताजा और नियमित जानकारी लेते रहना जिनसे स्कूल सामना कर सकता है। जैसे बाढ़, चट्टानों का खिसकना और चक्रवात के विषय में मौसम की ताजा जानकारी।

- किसी भी घटने वाले खतरे की सूचना विद्यालय प्रशासन को देना।
- क्षेत्रीय प्रशासन के साथ संपर्क बनाए रखना और सभी निर्देशों की सूचना विद्यालय प्रशासन को देना।
- सभी कक्षाओं और अध्यापकों में सभी सूचनाओं का प्रचार करना।
- दूसरे दलों के साथ संपर्क बनाए रखना और मौसम/चेतावनी स्तर की ताजा जानकारी से उन्हें सूचित करना।

आपदा के समय

- भूकम्प के पहले झटके के साथ ही अपने शरीर या सिर को बचाने के लिए झुक जाना। यदि फर्नीचर हिले तो उसे मजबूती से पकड़ लेना। यदि बाहर हैं तो भवनों/मकानों से दूर रहें।
- विभिन्न श्रोतों से प्राप्त जानकारी की जाँच करनी चाहिए।
- आपातकालीन स्थिति में विद्यालय में घंटी बजा कर अथवा सायरन द्वारा/माइक द्वारा, किसी व्यक्ति (संदेशवाहक) द्वारा विद्यालय को चेतावनी देनी चाहिए। जो भी तरीका विद्यालय में उपलब्ध हो, उसका प्रयोग करें।
- विद्यालय की आपदा प्रबन्धन समिति को विद्यालय भवन में हुई दुर्भाग्यपूर्ण क्षति की सूचना देना।
- आपातकालीन सरकारी विभाग के जिम्मेदार प्रशासक को आपदा संबंधी सूचना देना।
- यदि विद्यालय आश्रय स्थल के रूप में प्रयोग में लाया जा रहा है तो आश्रय विभाग के कर्मचारियों को मौसम और स्थल की ताजा जानकारी देना।

आपदा के पश्चात्

- लगातार विभिन्न सूचना श्रोतों पर नजर रखना।
- सभी संबंधित दलों को आपदा की स्थिति की सूचना देते रहना और उनसे संपर्क बनाए रखना।

- जागरूकता पैदा करने वाले दल के सहयोग से सुरक्षा उपायों का प्रचार करना।
- क्षेत्रीय प्रशासन की घटना प्रबन्धन दल के साथ सूचना प्रसारण और ताजा जानकारी के लिए मिलकर कार्य करना।

आपदा उत्तरदायी दल

1-रिक्तीकरण दल

सदस्य

- सभी कक्षा के एक अध्यापक
- कक्षा-प्रमुख छात्र और हॉल प्रमुख छात्र
- कुशल छात्र (छात्र नायक)

कार्य और उत्तरदायित्व

आपदा से पूर्व

- निकास मार्गों की जाँच।
- आपातकालीन रिक्तीकरण के समय विद्यालय के ऐसे खुले क्षेत्र जहाँ सारा विद्यालय एकत्र हो सके, उसकी पहचान करवाना।
- रिक्तीकरण के समय निश्चित क्षेत्र में जाने के मार्ग में कोई कठिनाई/बाधा न हो, इसकी जाँच अनिवार्य है।
- आवश्यक सामग्री पहुँच के अन्दर हो।
- तूफानी मौसम में रिक्तीकरण के समय अन्य विकल्पों को विकसित करने में योजना समिति की सहायता करना।
- विकलांग छात्रों के लिए आवश्यक विशेष साधनों की पूर्ण तैयारी।
- अन्य दलों के साथ मिलकर नियमित अभ्यास होना चाहिए। विभिन्न बाधाओं में विभिन्न रिक्तीकरण विधियों का नियमित अभ्यास होना चाहिए।
- सम्पूर्ण विद्यालय में विभिन्न विधियों का प्रचार हो और उन सभी के लिए अभ्यास कार्यक्रम करवाया जाए।

आपदा के समय

भूकम्प के पहले झटके के आने पर अपने सिर व शरीर को सुरक्षा के लिए झुका लें। यदि फर्नीचर हिले तो उसे मजबूती से पकड़ कर सुरक्षा के लिए प्रबन्ध करें। यदि बाहर हैं तो भवनों से दूर रहें। किए गए अभ्यास के अनुसार क्रमबद्ध तरीके से बाहर निकलें।

आपदा के पश्चात्

निश्चित करें कि आपदा के समय एकत्रित होने वाले क्षेत्र सुरक्षित व पहुँच के भीतर हैं। रिक्तीकरण के लिए यदि अतिरिक्त सहायता आवश्यक है, इस पर भी जरूर विचार करें। हाजिरी लें, दल की स्थिति की जानकारी प्रशासक (आपातकालीन संस्थान चालक) को दें।

2. बचाव कार्य और बचाव दल

सदस्य

- खेल-अध्यापक
- एन0सी0सी0, एन0एस0एस0, स्काउट्स और गाइड्स प्रशिक्षक
- नागरिक सुरक्षा प्रशिक्षक
- अग्नि-शमन केन्द्र प्रतिनिधि
- अभिभावक-दल / पुलिस / अग्नि शमन कर्मचारी / नागरिक सुरक्षा
- समर्थ छात्र

भूमिका और जिम्मेदारियाँ :-

आपदा से पूर्व :-

- सुनिश्चित कर लें कि आवश्यक सामग्री उस स्थान पर हो।
- सुनिश्चित कर लें कि टीम के सभी सदस्य अपने प्रशिक्षक के साथ वहाँ हों।
- विशेष छात्रों के लिए आवश्यक विशेष प्रति उच्च तकनीक को कृत्रिम अभ्यास के दौरान जाँच लें।

आपदा के दौरान :-

- भूकंप के पहले लक्षण पर ही सचेत हो जाएं। तुरंत इमारत से बाहर आ जाएं और सभी को बाहर निकलने के लिए कहें।
- किसी अन्य विपत्ति के समय बचाव व खोज कार्यवाही शुरू कर दें।

विपत्ति के पश्चात्

- पहले से स्थापित पैटर्न के अनुसार इमारत के सभी कमरे जाँच (चैक) कर लें।
- प्राथमिक चिकित्सा टीम को घायलों के विषय में रिपोर्ट।
- विद्यालय आपदा प्रबंधन समिति को अन्य समस्याओं के विषय में रिपोर्ट।
- स्पष्ट ढाँचागत समस्याओं को देखें।
- किसी भी नुकसान के बारे में प्रबंधकर्ता को रिपोर्ट दें।

3. प्राथमिक चिकित्सा टीम :-

सदस्य

- विद्यालय का डॉक्टर
- विद्यालय की नर्स
- सेट जॉन ब्रिगेड, रेडक्रॉस के कार्यकर्ता (स्वयंसेवक)
- जनसुरक्षा व बचाव स्वयंसेवक
- 1-2 अभिभावक चिकित्सा कार्य से संबंध रखने वाले।

- निश्चित कर लें कि प्राथमिक चिकित्सा टीम के सभी सदस्य बचाव टीम के साथ मिल कर कार्य करें।

4. अग्निशमन समूह

सदस्य :-

- दो अध्यापक
- 1-2 अभिभावक
- 10 छात्र
- 15 छात्रों व 1 अध्यापक की टीम बनाएं।

भूमिका और जिम्मेदारियाँ

आपदा से पूर्व :-

- सुनिश्चित करें कि अग्निशमन यंत्र अपने नियत स्थान पर चालू स्थिति में हों तथा स्टाफ को अग्नि बुझाने व उससे निपटने का प्रशिक्षण प्राप्त हो।
- सुनिश्चित करें कि भूकंप के खतरे जो आपदा के कारण बन सकते हैं उन्हें सुरक्षित रखा गया हो जैसे रसायन लैब, कैफेटेरिया, रसोईघर, गर्म पानी का टैंक आदि स्थान पूर्णतः सुरक्षित है।
- स्कूल परिसर में स्थानीय अग्नि विभाग द्वारा लाये जा रहे अग्नि सुरक्षा इन्तजामों का आंकलन कर विद्यालय आपदा प्रबंधन समिति के साथ समन्वय स्थापित करें और समिति द्वारा दिये गये सुझावों का क्रियान्वयन करें।

दुर्घटना के दौरान :-

- भूकंप के प्रथम संकेत पर जहाँ हों वहां से बाहर निकलने का प्रयास करें। अगर अन्दर हैं तो किसी भारी वस्तु को पकड़ लें जो हिले ना।

दुर्घटना के उपरान्त :-

- आग लगने के सभी मार्गों की जांच करें आग लगे स्थान की (रिपोर्ट) सूचना